Phones :
HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY
SUMMER HILL, SHIMLA-171005

ईना शास्त्री जी, नमस्कार!

दादा शास्त्री जी के निधन से मुझे इतना धक्का लगा है कि मैं स्वयं को सम्भाल नहीं पा रहा हूं। पिछले दिनों परीक्षा में वे स्वयं आये थे और उन्होंने मेरा संगीत सुनने की तीव्र इच्छा व्यक्त की थी। खैर याद रह जाती है मगर वक्त गुजर जाता है। फूल खिलता है मगर खिल के बिखर जाता है।

इस समय मैं अपने आप को भावुक होने से रोक रहा हूं। उनके जाने के बाद मुझे जो वेदना हुई है वह शायद अपने सगे सम्बन्धी के बिछड़ने पर भी नहीं हुई है! मैंने श्रद्धांजली के तौर एक गीत की रचना की है मुझे आशा है यह उनके जीवन पर सही उतरता है। यदि आप को गीत पसन्द आये तो यह एक अमर कृति बन सकता है! आप चाहें तो मैं कभी भी आवाज़ देकर रिकार्ड करवा दूंगा। बाकी जैसा आप को उचित लगे।

P.T.O.

श्रद्धान्जली

गीत

तेरे माथे पे उगते हुये सूरज को हमने देखा है
इक नये दौर के आकाश को बनते हुये देखा है

– एक नयी राह ~~नयी~~ चाह नयी मंजिल दी है
मसीहा प्यार का बनकर के नयी ज़िंदगी दी है
तूने पारस की तरह छूके सबको स्वर्ण किया
कलमो हुनर से के धरती को है स्वर्ग दिया
तेरे सपनों को साकार करेंगे
फूल और कलियों में रंग भरेंगे
तेरी हिम्मत से तो सहरा में
फूल खिलते देखा है . . . .

– तेरी नेकी के तराने हमें याद आयेंगे
बाखुदा भूल के भी तुझ को न भुला पायेंगे
युग-2 तक तेरा नाम अमर रहेगा
तेरी नेकी के अफसानों की दास्तां कहेगा
भीगी भीगी आँखों से अश्कों को झरते हुये देखा है
तेरे जाने से सुर ताल को बिखरते हुये देखा है

तू आफरीं है, तू आफरीं है तू आफरीं है

— पन्नालाल वर्मा

गीत की धुन भी कागज़ पे ऊपर बांध दी गई है
तो यह सब तरह से सच्ची श्रद्धांजली सिद्ध होगी
आपकी प्रतीक्षा में . . . .